WITWAVES
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Vol-1 Issue-2

(International Peer-Reviewed E-Journal)
(November 2024)

भारतीय स्वाधीनता संघर्ष का इतिहास (1942-1947 के मध्य)

बृजेश तिवारी

शोध सार

भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के 1942-1947 का काल संघर्ष की चरम अवस्था को व्यक्त करता है इस दौरान न केवल नेतृत्व अपितु जनमानस भी अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए तथा माँ भारती को स्वतंत्र कराने के लिए कमर कस लिया था, ऐसे में शीर्ष नेतृत्व पीछे क्यों रहता, वह अपने-अपने तरीकों के साथ, भारत को स्वतंत्र कराने का प्रयास कर रहा था जैसे सुभाषचंद्र बोस भारत से बाहर निकलकर भारत को आजाद कराने का प्रयास कर रहे थे, तो गांधी एवं अन्य नेता भारत की आजादी की लिए अलग-अलग तरीकों का इस्तेमाल कर रहे थे। एक बात तो स्पष्ट है कि भारत की जनता अब साधन और साध्य की पवित्रता पर ध्यान देने पर उतारू नहीं थी अब उसे सिर्फ साध्य दिख रहा था। साधन की चिंता नहीं थी।

शब्द कुंजी

जनमानस, स्वतंत्रता संघर्ष, समाजवादी आजादी, सम्प्रदायिकता, स्वाभिमान, साध्य।

परिचय

प्रस्तुत शोध 1942-1947 में स्वतंत्रता संघर्ष के अंतिम चरण के बारे में सूक्ष्म विश्लेषण के साथ द्वितीय सूत्रों का उपयोग करते हुए समीक्षात्मक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इस शोध का पूरा जोर भारतीय जनता में राष्ट्रवाद के आगमन के उपरांत आये तूफान को सकेतिक करने का प्रयास किया गया है।

जैसा कि शीर्षक से ही स्पष्ट है कि हम 1942 में 1947 तक के सभी आयामों का जो भारतीय स्वाधीनता संघर्ष् में अपना योगदान दिया है। उनका उल्लेख करने का प्रयास करेगें और उसके प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तार्किक प्रमाणों का मूल्यांकन करते हुए अपने शोध उद्देश्य को प्राप्त

करने का प्रयास करेगें और यह भी बताने का प्रयास करेगें कि द्वितीय विश्व युद्ध कारण भारतीय जन सामान्य किन परिस्थितियों से गुजर रहा था और उस असंतोष को प्रमुख नेत्रत्व किस तरह महसूस कर रहा था। ऐसे असंतोषों के द्वारा अंग्रेज विरोधी रूपरेखा तैयार हो रही थी जिसमें आमजन की भागीदारी सर्वोपरि थी।

मुख्य विषय वस्तु

1942 का साल उस काल को सूचित करता है। जब भारतीय जनता ने अपनी वीरता के अंतिम संघर्ष की अद्वितीय मिशाल को प्रस्तुत किया यह संषर्घ ऐसी परिस्थितियों में जन्म लिया था जब क्रिप्स मिशन 1942 असफल हो गया था और स्टफर्ड क्रिप्स भारत से जा चुके थे (वहीं दूसरी तरफ द्वितीय विश्व युद्ध के कारण) क्रिप्स मिशन के संदर्भ में नेहरू जी ने लिखा था ''जब मैंने पहली बार इन प्रस्तावों को पढ़ा तो अत्यधिक निराश हुआ। गांधी जी ने ब्रिटिश सरकार की प्रस्तावों के माध्यम से वचनवद्धता को'' एक ऐसी बैंक जिसका स्पष्ट रूप से पतन हो रहा था, का उत्तर दिनांकित चैक कहा''[1] ऐसे में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जो पहले से ही ब्रिटिश नीतियों से खपा थी वह अब एक बड़े आंदोलन को चलाने की फिराक में थी क्योंकि द्वितीय विश्व युद्ध के प्रारम्भ होने से महंगाई अपने चरम पर थी सरकार यहां के खर्च को बढ़ाती जा रही थी लोग बैंको से अपने पैसे निकालने लगे थे पूर्वी एशिया एवं भारत में लोगों के पलायन बहुत तेजी से हो रहे थे। जापान भारत की ओर बढ़ रहा था मित्र राष्ट्रों की स्थिति दयनीय हो गयी थी ऐसे में अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट, चीन के राष्ट्रपति च्यांग काई शेक तथा ब्रिटेन के श्रमिक नेताओं ने विस्टन चर्चिल पर दबाव डाला कि कैसे भी हो भारतीय लोगों का सहयोग लेने को प्रयास किया जाय इसी दबाव के कारण क्रिप्स मिशन भारत आया[2] लेकिन इस मिशन की मंशा को जानने के बाद भारतीय नेताओं को बड़ी निराशा हुई साथ ही जनता की आस्था ब्रिटिश शासन से टूट चुकी थी ऐसे में गांधी जी को अब देर करना बिल्कुल सही नहीं लग रहा था उन्होंने कांग्रेस को चुनौति दे डाली कि अगर संघर्ष का उनका प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया गया तो "मैं देश की बालू से ही कांग्रेस से बड़ा आंदोलन खड़ा कर दूंगा"[3] इस चुनौती का परिणाम यह हुआ कि कांग्रेस ने 14 जुलाई 1942 में बर्धा (महाराष्ट्र) कांग्रेस का आयोजन कर इनके प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान कर दिया। अब प्रस्ताव के अनुमोदन के लिए एक और बैठक होनी थी जो मुम्बई के ग्वालिया

टैंक में हुई अंदर बैठकर नेताओं की मिटींग हो रही थी तो बाहर जन सैलाब इस उत्साह से खड़ा था कि निर्णय के पश्चात संघर्ष किस रूप में आगे बढ़ेगा विपिन चन्द्रा लिखते है कि खुले में जब भाषण होने लगा तब हजारो-हजार की भीड़ होने पर भी भाषाण-शांतिपूर्ण सम्पन्न हुआ। महात्मा गांधी ने स्पष्ट कर दिया कि "असली संघर्ष इसी क्षण से शुरू नहीं हो रहा है। आपने सिर्फ अपना फैसला करने का सम्पूर्ण अधिकार मुझे सौंपा है अब मैं वायसराय से मिलूंगा और उनसे कहूंगा कि वे कांग्रेस का प्रस्ताव स्वीकार कर ले। इसमें दो या तीन हफ्ते लग जायेंगे" लेकिन ''इतना तो निश्चित है कि मैं वायसराय से ऐसा कोई समझौता नहीं करूंगा जिससे आपकी भावनाओं के ठेस पहुँचे मैं सम्पूर्ण आजादी से कम किसी वादे से संतुष्ट होने वाला नहीं"[4] इस वक्तव्य में गांधी जी ने जनता को करो या मरों का नारा दिया। गांधी जी ने स्पष्ट कर दिया था कि भारत को आजाद कराने में अगर हमें प्राण भी गवाने पडे तो कोई गम नहीं, हम अपनी गुलामी का यह नरकीय रूप देखने के लिए जिंदा नहीं रहना चाहते।

गांधी जी के भाषण के उपरांत पूरे भारत में एक शक्ति का संचार दिखाई पड़ने लगा कांग्रेस के निर्देशों के अनुसार सरकारी नौकरों ने अपनी नौकरी छोड़ दी, सैनिकों ने देश वासियों पर गोली चलाने से मना कर दिया और यह स्पष्ट कर दिया गया था कि जो रियासते इस महायज्ञ में (स्वतंत्रता संघर्ष) सहयोग करे उनको कर दिया जाय नहीं तो उस रियासत को कोई भी मालगुजारी किसानों द्वारा न दी जाय जो भारत छोड़ो आंदोलन में सहयोग नहीं कर रहे हैं। 9 अगस्त को आपरेशन जीरों आवर के तहते बड़े नेताओं को गिरफ्तार किया जाने लगा इस तरह 'भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव पारित होते ही देश में तूफान सा आ गया और 10 अगस्त तक यह आंदोलन दिल्ली, कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, पटना आदि बड़े-बड़े शहरों में जुलूस के रूप में निकलने लगा। जनता अब नेतृत्व विहिन हो गयी वह जहाँ जाती वही बिजली के तार, सरकारी भवनों, आवासों पर तोड़-फोड़ मचा देती इसमें मजदूर, किसान, विद्यार्थी, कामगार सभी सम्मिलित थे। अभी स्थानीय नेताओं को गिरफ्तार नहीं किया गया था उन्होंने गुप्त रूप से भारत- छोड़ों आंदोलन का नेतृत्व प्रदान किया। विपिनचन्द्र ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि नेताओं की गिरफ्तारी के एक सप्ताह में 250 रेलवे स्टेशन, 500 से ज्यादा डाकघर, 150 थानों को तोड़ा गया या क्षतिग्रस्त कर दिया गया, सिर्फ कर्नाटक में 1600 घटनाएं टेलीफोन के तार

काटने की हुई पुलिस कहा पीछे रहने वाली थी उसने निहत्थी जनता पर गोली चलवाने के साथ-साथ हवाई जहाज से मशीन गन चलवाई लोगों को काड़े से पीटा गया, आग लगा दिया गया। 1942 के अंत तक 60 हजार से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया गया[-5]। इस बीच देश के स्थानीय नेता जो गिरफ्तारी से बच गये थे उन लोगों में अच्यूत पटवर्धन, अरूणा आसफ अली, राममनोहर लोहिया, सुंवेता कृपलानी, छोटू भाई पुराणिक, बीजू पटनायक, आर.वी. गोयनका और जेल में भागकर आये जयप्रकाश नारायण आदि ने हर तरीके से पैसा, बम, वारूद हथियार ही नहीं उपलब्ध कराते थे अलग-अलग स्थानों के गुप्त रेडियो से इसका निर्देश देते थे कि कैसे ब्रिटिश सरकार को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया जाय राममनोहर लोहिया नियमित रूप से रेडियों पर बोलते थे जिसे मद्रास तक सुना जाता था। नवम्बर 1942 को पुलिस ने इस स्टेशन को खोजा और उसे जब्त कर लिया साथ ही कई स्थानों पर किसानों और नेताओं ने स्थानीय सरकारें भी स्थापित कर ली। उधर सरकार यह प्रयास कर रही थी कि गांधी इस हो रहे उत्पातों की आलोचना करे लेकिन गांधी कहा मानने वाले थे उन्होंने 10 फरवरी 1943 को 21 दिन का उपवास प्रारंभ कर दिया।[6] और जैसे-जैसे यह बात लोगों तक पहुंची, लोगों में और आक्रोश आ गया लोगों के जुलूस के रेला आ गया पैलेस तक आ गया जहां गांधी जी को गिरफ्तार करके नजरबंद किया गया था लोगों ने ही नहीं विश्व के बहुत से समाचार पत्रों ने भी गांधी जी की रिहाई की मांग की आस्ट्रेलिया की काऊसिंल ऑफ हेड यूनियन और सीलोन स्टेट काऊसिंल ने भी गांधी जी को रिहा करने की सलाह दी ऐसे में अमेरिकी सरकार ने ब्रिटेन से यह आशा की कि गांधी को छोड़ने पर ही शांति स्थापित हो पायेगी।[7] लेकिन ब्रिटिश वायसराय एवं प्रधानमंत्री चर्लिल पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा था चर्चि कहता है कि ''जब दुनिया में हम हर कहीं जीत रहे हैं, ऐसे वक्त में हम एक कमबख्त बुढ्ढे के सामने कैसे झुक सकते हैं, जो हमेशा हमारा दुश्मन रहा है'' ब्रिटिश गवर्नमेंट को गांधी के मौत का जरा भी अफसोस नहीं था लेकिन इसी सहानुभूतियों को प्राप्त करने और विश्व की दृष्टि भारत की तरफ आकर्षित कर गांधी अपने उपवास के लक्ष्य की तरफ पहुंच रहे थे तो वही दूसरी तरह भारत के एक वीर सेनानी सुभाषचंद्र बोस देश की आजादी को जल्द-से-जल्द दिलाने के लिए जर्मनी- जापान होते हुए 2 जुलाई 1943 को सिंगापुर आए वहां से टोक्यों गये जहां उन्होंने जापनी प्राधानमंत्री का सहयोग ओर समर्थन प्राप्त किया इससे जापानी सेना के द्वारा गिरफ्तार किए गये भारतीय सैनिकों के एक समूह

जिसमें 16300 सैनिक थे जिसका नेतृत्व कैप्टन मोहन सिंह कर रहे थे उन्होंने सुभाषचंद्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिंद फौज ने देश को इसे फौज को प्रदान किया इस आजाद कराने का जिम्मा उठाया। 31 अक्टूबर 1943 को बोस ने स्वाधीन भारत सरकार गठित किया इस सरकार ने ब्रिटेन और अमेरिका के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी क्योंकि मित्र राष्ट्रों में अमेरिका भी सम्मिलित हो गया था 6 जुलाई 1944 को बोस ने गांधी जी को संबोधित करते हुए एक रेडियों प्रसारित किया जिसमें उन्होंने कहा था कि ''भारत की स्वाधीनता का आखिरी युद्ध शुरू हो गया है। राष्ट्रपिता भारत की मुक्ति के इस पवित्र युद्ध में हम आपका आशीर्वाद और शुभ कामनाएं चाहते हैं[8] 'आजाद हिंद फौज अपने उद्देश्य में भले ही सफल न हो पायी हो क्योंकि मित्र राष्ट्र अधिक शक्तिशाली हो गये थे जिसमें अमेरिका भी सम्मिलित हो गया था और हिरोशिमा और नागाशाकी पर परमाणु बम गिरने के वाद जापान ने भी आत्मसमर्पण कर दिया

जिससे भारतीय आजाद हिंन्द फौज की सेना के गिरफ्तार कर लिया गया तथा गिरफ्तार सैनिकों के लिए जो मुकदमें चलाए गये उससे भारत की जनता में बड़ा रोश था जिसके कारण देश की जनता ने अपने उत्सवों को मनाने से भी मना कर दिया भारत के हर घर एवं छोटे-मोटे रोजी-रोटी चलाने वालों ने भी इस मुकदमें के खर्च के लिए चन्दे भेजें कलकत्ता और पंजाब आजाद हिंद फौज के समर्थकों का केंद्र बन गया था ब्रिटिश गुप्तचर ब्यूरों के निर्देशक ने यह बताया कि ''शायद ही कोई और मुद्दा हो जिसमें भारतीय जनता ने इतनी दिलचस्पी दिखाई हो'[9] इस मुकदमें के साथ ही देश में तीन और घटनाएं हुई जिसमें- पहली आजाद हिंद फौज के मुकदमें को लेकर 21 नवम्बर 1945 को कलकत्ता एवं दूसरी रशीद अली को सजा और तीसरी घटना 18 फरवरी 1946 की रायल इंडियन नेवी के नाविकों का विद्रोह इन तीनों घटनाओं ने भारतीय जनता को इस प्रकार तैयार कर दिया कि अब भारत स्वतंत्रता से कम कुछ नहीं चाहता।

ऐसे समय एटली ने जून 1948 तक भारत को मुक्त कर देने की घोषण की जिसके उपरांत नये वायसराय लार्ड माऊटवेंटन की नियुक्ति की घोषण की जाती है और उनको भारत भेजकर भारतीय विभाजन और स्वतंत्रता के नाम पर माऊंटबेटन योजना का प्रस्ताव रखा जाता

है जो 24 मार्च 1947 को भारत पहुंचा ये बात कुछ दूरदर्शी उद्देश्य से भरा था हालांकि द्वितीय माऊंटबेटन प्लान ने भारत को विभाजित करने का प्रस्तुत किया जिसे 18 जुलाई 1947 को भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम के नाम से पारित कर दिया गया इसी के साथ भारत को आजाद और विभाजित करनी की तिथि 14,15 अगस्त निर्धारित की गई अब भारत और पाकिस्तान न केवल अगल हुए अपितु ब्रिटेन की गुलामी से आजाद भी हुए लेकिन यह वह काल था जब एवं वृद्ध व्यक्ति एक लाठी के सहारे नोआखाली में सम्प्रदायिक सौहार्द स्थापित करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा था जिसके कारण लार्ड माउंटबेंटन ने महात्मा गांधी को वन मैन बाउन्ड्री फोर्स कहा। जिन्होंने इस साम्प्रदांयिक संघर्ष एवं विभाजन को रोकने के लिए अंतरिम सरकार लीग के नेता जिन्ना सौंपने की सलाह दी थी।

निष्कर्ष

इस प्रकार 1942 से 1947 का काल वीरता उत्साह का काल तो था ही लेकिन दमन/भय, आतंक और संप्रदायिक दंगों का भी काल था जिसमें एक तरफ भारत की आजादी के लिए भारत का हर तबका अपने जान की बाजी लगाने को खड़ा था तो दूसरी तरफ अंग्रेजी सरकार हर प्रकार से यह प्रयास कर रहा थी कि इसकी शक्ति को तोड़ने के लिए हमें किस हथियार रूपी नीति का प्रयोग करना है। हमारे स्वाधीनता संघर्ष के पुजारी अधिक शक्तिशाली हुए जो भारत को आजाद कराने से सफल रहे, हॉ एक अफसोस तो हमेशा रहेगा कि भारत को दो तरफ से काट दिया गया जिसका दंश आज भी भारत झेल रहा है। कुल मिलाकर स्पष्ट है कि भारतीय स्वतंत्रता जनमानस के असंतोष और प्रतिरोध का परिणाम था क्योंकि ब्रिटिश सरकार की अत्याचार पूर्ण नीतियों में जनता पीड़ा से कराह रही थी ऐसे में हमारी महान विभूतियों ने जनता को न केवल नेतृत्व प्रदान किया अपितु भावी भारत की संकल्पना की जो एक नये सबेरे की कल्पना भी प्रस्तुत की जिसका परिणाम था कि जनता बिना नेतृत्व के भी भारतीय आजादी के सपने देख रही थी और उसे पूरा करने के लिए उसने अपने प्राणों को नौछवर भी किया। आज हम जिस स्वतंत्र भारत में है उसमें वीर बलिदानी लोगों के अदम्य साहस का योगदान है जिसे हमें हमेशा संजोए रखना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भारत की स्वतंत्रता का इतिहास- हरिश कुमार खत्री पृष्ठ सं. 248 कैलाश पुस्तक सदन भोपाल
2. आधुनिक भारत का आर्थिक और राजनीतिक इतिहास- डॉ. राजीव कुमार जैन पृष्ठ सं. 513 कैलाश पुस्तक सदन भोपाल
3. भारत का स्वतंत्रता संघर्ष- विपिनचन्द्रा पृष्ठ सं. 367 हिंदी माध्यम कार्यान्वन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय
4. उपरोक्त- पृष्ठ सं. 368
5. उपरोक्त- पृष्ठ सं. 370
6. History of the Freedom Movement in India Vol.-IV Government of India Publication Division P-390
7. आधुनिक भारत का इतिहास- रामलखन शुक्ल पृष्ठ सं. 868 हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निर्देशालय दिल्ली विश्वविद्यालय
8. राष्ट्रीय आंदोलन (1943- 1946) सुचेता महाजन पृं. 868 से 883